

Information Ministers was held in New Delhi on the 20th and 21st July, 1966;

(b) if so, whether a delegation from the film industry was also invited;

(c) the persons who were invited from the film industry; and

(d) the reasons for inviting private people to a purely official meeting of the State Information Ministers?

The Minister of Information and Broadcasting (Shri Raj Bahadur): (a) and (b). Yes, Sir.

(c) A statement is laid on the Table of the House. [Placed in Library See. No. LT—6946/66].

(d) The object was to enable the representatives of the film industry to make personal representations at this conference on some of the more important problems of the industry concerning both the Central and State Governments. The film industry's representatives made their oral submissions at the conference and did not participate in its agenda.

Defence Production

***741. Shri Ranga:
Shri N. Dandeker:**

Will the Minister of Defence be pleased to state:

(a) whether any assessment of the defence production in relation to the expenditure incurred on ordnance factories has been made;

(b) whether any expert committee was ever appointed to lay down the norms of defence expenditure and production; and

(c) whether Government have any proposal under consideration for the appointment of an expert committee to ensure that defence production is commensurate with the expenses incurred thereon?

The Minister of State in the Ministry of Defence (Shri A. M. Thomas):

(a) Yes, Sir. This assessment is continuously carried out on the basis of monthly summary of financial activities and annual accounts.

(b) No expert committee has been appointed to lay down the norms of defence expenditure and production. There exists, however, an elaborate system of control of expenditure on production through prescription of standards, collection of expenditure on individual jobs, comparison of them with the standards, and taking corrective action whenever the difference between the standard and actual expenditure is wide enough to warrant it.

(c) Does not arise in view of (b).

गोमांस मूल्य सम्बन्धी बुलेटिन

***743. श्री रामेश्वरानन्द:**

श्री हुकम चन्द कछवाय :

श्री यु० द० सिंह:

श्री युद्धवीर सिंह:

श्री प्रकाशवीर शास्त्री :

श्री जगदेव सिंह सिद्धांती:

क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दार्जिलिंग जिले में कुरसियांग रेडियो स्टेशन से अन्य वस्तुओं के मूल्यों के साथ-साथ गोमांस का मूल्य भी घोषित किया जाता है ;

(ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ; और

(ग) इस प्रकार के प्रचार के परिणाम स्वरूप देश में फैल रहे असन्तोष को दूर करने के लिये सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) से (ग) आकाशवाणी से बाजार भाव के बुलेटिन इस उद्देश्य से शुरू किए गए थे कि लोगों को जरूरी चीजों के बाजार भाव बराबर मालूम होते रहें, और कोई दुकानदार उन से ज्यादा दाम न ऐंठ सके। ये बुलेटिन 16-6-66 से शुरू किए गए थे और इन में रोजाना इस्तेमाल में आने

बाली चीजों के बाजार भाव बताए जाते हैं। ये भाव उसी नगर और उसके इर्द गिर्द के क्षेत्र के होते हैं, जहां आकाशवाणी का केन्द्र होता है। बाजार भाव, सम्बन्धित स्थानीय अधिकारियों द्वारा भेजे जाते हैं, जो प्रसारण के पहले दिन के होते हैं।

विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित बुलेटिनों में, जो चीजें शामिल की जाती हैं, वे स्थान के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं। मुख्य चीजें अनाज, दाल, मिट्टी का तेल, खाने के तेल, आलू, प्याज, अडा, गोश्त, मच्छली, मुर्गी, साबुन, दंतमंजन, हजामत के ब्लेंड आदि होते हैं। जहां तक आकाशवाणी के कुर्सियांग केन्द्र का सम्बन्ध है, वहां से गोमांस और सूअर के गोश्त के भाव भी प्रसारित किए जा रहे थे, क्योंकि कुर्सियांग नगरपालिका और जिला सूचना अधिकारी, दार्जिलिंग, द्वारा भेजी जाने वाली सूची में गोमांस का भाव भी होता था।

यद्यपि आकाशवाणी के कुर्सियांग केन्द्र को, गोमांस या सूअर के मांस के भाव सुनाने पर स्थानीय श्रोताओं से कोई शिकायत नहीं मिली है, फिर भी 19-8-1966 से आकाशवाणी के कुर्सियांग केन्द्र द्वारा प्रसारित बुलेटिन से ये दोनों चीजें निकाल दी गई हैं।

चीन द्वारा सीमा-उल्लंघन

*744 श्री प्रकाशवीर शास्त्री: क्या बंदेशिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि चीनी सेनाओं ने 25 जुलाई और 4 अगस्त, 1966 के बीच लद्दाख के दौलतबेग ओलदी क्षेत्र में चार बार सीमा-उल्लंघन किया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि चीनी सेना अभी तक उस क्षेत्र में मौजूद है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि भारत सरकार द्वारा विरोध पत्र भेजे जाने के बावजूद वे वहां से नहीं हटी हैं ; और

(घ) यदि हां, तो इसके बारे में सरकार की प्रतिक्रिया क्या है ?

बंदेशिक-कार्य मंत्री (श्री स्वर्ण सिंह) :

(क) से (घ): जी हां, चीन की सरकार के पास 11 अगस्त 1966 को एक विरोध-पत्र भेजा गया था। प्रत्येक अतिक्रमण के बाद, चीनी सैनिक तथाकथित "वास्तविक नियंत्रण रेखा" के अपनी तरफ लौट गये थे।

Rocket and Rocket Launcher used by Nagas

*745. **Shri Madhu Limaye:**
Shri Kishen Pattnayak:
Dr. Ram Manohar Lohia:

Will the Minister of **External Affairs** be pleased to refer to the reply given to starred Question No. 1309 on the 25th April, 1966 and the Railway Minister's statement on the 27th April, 1966 and state:

(a) whether Government have made any effort to ascertain how the rocket and rocket launcher of French mark and other weapons bearing foreign marks reached the Naga rebels;

(b) whether they have tried to find out through diplomatic channels whether the above weapons were given by France or other countries to Pakistan and by Pakistan to the Naga rebels; and

(c) the results of these inquiries?

The Minister of State in the Ministry of External Affairs (Shri Dinesh Singh): (a) to (c): The Embassy of France in India was informed about the markings found on the tail piece of one rocket that was found near the site of the incident.

The Embassy of France has not so far addressed to Government any communication on the subject.